CENTRE FOR RESEARCH IN ANCIENT INDIAN MATHEMATICS

Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
(NAAC Accredited "A+")

School of Data Science and Forecasting
Takshashila Campus, Khandwa Road,
Indore - 452 001 (M.P.)
Mob. : 09425053822
E-mail : anupamjain3@rediffmail.com

Dr. Anupam Jain
Prof. & Director

No. : _____ Date _____

प्रकाशनार्थ, 02.01.2023

देश के प्रथम जैन गणित केन्द्र का शुभारम्भ

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के डाटा विज्ञान एवं पूर्वानुमान अध्ययनशाला के अन्तर्गत भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय द्वारा देश के प्रथम जैन गणित केन्द्र का आज यहाँ शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर जीवाजी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. वी.पी. सक्सेना, देवी अहिल्या वि.वि. की कुलपति प्रो. रेणु जैन, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रौद्योगिकी संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. राजीव सांगल, आई.आई.टी. इन्दौर के पूर्व निदेशक प्रो. नीलेश जैन, विभागाध्यक्ष डॉ. वी.बी. गुप्ता, जैन गणित केन्द्र के निदेशक प्रो. अनुपम जैन एवं कुलसचिव डॉ. अजय वर्मा आदि उपस्थित थे।

केन्द्र का शुभारम्भ करते हुए प्रो. सक्सेना ने कहा कि मैं जैन गणित का साधारण विद्यार्थी हूँ, लेकिन विगत 55 वर्षों से निरन्तर विद्यार्थी हूँ। हमारे प्राचीन ग्रंथों में जैन गणित के समाहित हैं। जैन गणित एवं वैदिक गणित भारत में समानान्तर चला। भगवान महावीर जैन गणित के ज्ञाता थे। प्राचीन जैन ग्रंथ लोक विभाग में शून्य का वर्णन है।

कार्यकम की अध्यक्षता करते हुए दे.अ.वि.वि. की कुलपति डॉ. रेणु जैन ने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा का साहित्य बहुत समृद्ध है। जब मैं अपनी डी.एस–सी. करूँगी तो जैन गणित पर ही करूँगी।

इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में बीएचयू आई टी से पधारे प्रो. राजीव सांगल ने कहा कि इस सेन्टर पर भारतीय ज्ञान परम्परा की विभिन्न शाखाओं का यहाँ ऐतिहासिक तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करने के साथ ही एवं अनुप्रयोगों का भी अध्ययन होना चाहिये।

सारस्वत अतिथि के रूप में पधारे प्रो. नीलेश जैन आई.आई.टी.–इंदौर ने अपने वक्तव्य में कहा कि शून्य की खोज भारत में ही हुई। विद्यालयीन शिक्षा में भारतीय ज्ञान परम्परा को शामिल किया गया है। भारतीय ज्ञान परम्परा पर कार्य करने का प्रयास सर्वप्रथम इंदौर आई.आई.टी. ने ही किया। यह केन्द्र भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन को बढ़ाने में सहायक होगा।

भारतीय ज्ञान परम्परा जैन गणित केन्द्र के निदेशक प्रो. अनुपम जैन ने जैन गणित के विकास के ऐतिहासिक कम को बताते हुए कहा कि आज का दिवस मेरे जीवन का अत्यन्त सुखद दिवस है। क्योंकि मैंने इस क्षेत्र में 1980 से काम शुरू किया। स्वयं की पीएच.डी. करने के साथ ही 10 अन्य छात्रों को इस विषय में पीएच.डी. कराई किन्तु इस केन्द्र की स्थापना से अध्ययन एवं अनुसंधान के कार्यों को बहुत अधिक गति मिलेगी। आपने स्पष्ट किया कि प्राचीन जैन ग्रंथों में उपलब्ध गणितीय सूत्रों, सिद्धान्तों तथा जैनाचार्यों द्वारा प्रणीत स्वतंत्र गणितीय ग्रंथों में उपलब्ध गणितीय ज्ञान को ही **जैन गणित** कहा जाता है।

विभागाध्यक्ष प्रो. विजय बाबू गुप्ता ने समागत अतिथियों को स्वागत करते हुए डाटा विज्ञान एवं पूर्वानुमान अध्ययनशाला की स्थापना एवं अब तक की प्रगति की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। आपने कहा कि प्रो. जैन के सुदीर्घ अनुभव एवं कर्मठता से यह केन्द्र राष्ट्रीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित करेगा।

नवागत कुलसचिव श्री अजय वर्मा ने कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि इस वि.वि. में पुनः पदस्थापना के प्रथम दिन ही मुझे इस महत्त्वपूर्ण केन्द्र के उद्घाटन में सम्मिलित होने का अवसर मिल रहा है। वि.वि. प्रशासन का इस कार्य में पूर्ण सहयोग और सर्मथन रहेगा।

इस अवसर पर केन्द्र के संदर्भ में डॉ. प्रगति जैन, मनावर एवं प्रो. एस.के. बंडी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। श्री देवेन्द्र राव देशमुख–विद्याभारती, रायपुर आदि ने साहित्य भेंट किया। डॉ. सूरजमल बोबरा ने केन्द्र के प्रथम शोध छात्र को आर्थिक सहयोग की घोषणा की।

संलग्नः–चित्र उसी अवसर के

(डॉ. अनुपम जैन)
केन्द्र निदेशक